International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.972 Volume 11, Issue 1, January 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

प्रवासी हिंदी साहित्य में नारीवादी दृष्टिकोण और स्त्री अस्मिता

भतेरी, पीएचडी शोधार्थी, हिन्दी विभाग
कलिंगा यूनिवर्सिटी, नया रायपुर -छतीसगढ़
डॉ श्रद्धा हिरकाने, प्रोफेसर , हिन्दी विभाग
कलिंगा यूनिवर्सिटी, नया रायपुर -छतीसगढ़

सारांश: यह शोध-पत्र प्रवासी हिंदी साहित्य में नारीवादी दृष्टिकोण और स्त्री अस्मिता के विविध आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्रवासी महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य में स्त्री संघर्ष, सांस्कृतिक द्वंद्व और आत्मनिर्भरता को प्रमुखता से चित्रित किया है। शोध में विषय के विभिन्न पहलुओं का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है।

परिचय: प्रवासी हिंदी साहित्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संघर्षों का वैश्विक प्रतिबिंब है। प्रवासी महिला लेखिकाएँ अपने अनुभवों के माध्यम से नारीवादी दृष्टिकोण और स्त्री अस्मिता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। सुधा ओम ढींगरा, सुर्मि बेदी और उषा प्रियंवदा के साहित्य में प्रवासी स्त्री की अस्मिता और संघर्ष झलकते हैं।

नारीवादी स्वर और स्त्री अस्मिता:

प्रवासी हिंदी साहित्य में नारीवादी स्वर आत्मनिर्णय, अधिकार और सामाजिक असमानता के प्रश्नों को प्रमुखता से उभारता है। प्रवासी महिला लेखिकाएँ अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन के विविध पक्षों, संघर्षों और स्वायत्तता की गाथा प्रस्तुत करती हैं। सुधा ओम ढींगरा के उपन्यासों में प्रवासी महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सामाजिक असमानता के प्रति संघर्ष झलकते हैं।

उनकी रचनाओं में स्त्री-पुरुष असमानता, पारिवारिक विघटन और सांस्कृतिक द्वंद्व का गहन चित्रण है। उनकी नायिकाएँ अपनी पहचान के लिए समाज की रूढ़ियों से टकराती हैं और आत्मनिर्णय के पथ पर आगे बढ़ती हैं। सुधा ओम ढींगरा का लेखन प्रवासी समाज में स्त्री की चुनौतियों और उनकी जिजीविषा को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

सुर्मि बेदी की कहानियाँ प्रवासी समाज में महिलाओं के आत्मसम्मान और स्वायत्तता की खोज को सजीव करती हैं। उनकी रचनाओं में नारी जीवन के संघर्ष, अकेलापन और सांस्कृतिक टकराव का मार्मिक चित्रण मिलता है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

बेदी की नायिकाएँ अपनी अस्मिता के लिए समाज से संघर्ष करती हैं और प्रवासी जीवन में अपने अस्तित्व की तलाश करती हैं। उनकी कहानियाँ केवल प्रवासी पीड़ा का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि उसमें निहित शक्ति और आत्मनिर्णय के स्वर को भी उभारती हैं।

उषा प्रियंवदा के साहित्य में प्रवासी महिलाओं की मानसिक पीड़ा और सांस्कृतिक असमंजस के साथ-साथ उनका संघर्ष और आत्मनिर्णय का स्वर प्रमुख है। वे प्रवासी स्त्री के भीतर के द्वंद्व, अकेलेपन और सांस्कृतिक पहचान के संघर्ष को गहराई से चित्रित करती हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय और विदेशी संस्कृतियों के बीच झूलती नारी की संवेदनाएँ जीवंत रूप में प्रस्तुत होती हैं। उनकी नायिकाएँ अक्सर जीवन के कठोर यथार्थ से जूझते हुए अपनी राह खुद तय करती हैं। उषा प्रियंवदा का साहित्य प्रवासी स्त्री जीवन के मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को विस्तार से उजागर करता है।

इस प्रकार प्रवासी हिंदी साहित्य में सुधा ओम ढींगरा, सुर्मि बेदी और उषा प्रियंवदा जैसी लेखिकाएँ नारीवादी स्वर को गहराई और व्यापकता प्रदान करती हैं। वे प्रवासी स्त्री जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और स्वायत्तता की खोज को न केवल व्यक्त करती हैं, बल्कि पाठकों को नारीवादी दृष्टिकोण से सोचने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

सांस्कृतिक द्वंद्व और संघर्ष:

प्रवासी महिला लेखन पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों के टकराव और उससे उत्पन्न तनावों को प्रकट करता है। प्रवासी साहित्य में यह द्वंद्व केवल बाहरी संघर्ष नहीं, बल्कि आंतरिक भावनात्मक उलझनों और पहचान के प्रश्नों को भी उभारता है। यह साहित्य प्रवासी महिलाओं के जीवन में उपस्थित सामाजिक, पारिवारिक और सांस्कृतिक चुनौतियों को कई स्तरों पर प्रस्तुत करता है।

इला प्रसाद के उपन्यासों में प्रवासी महिलाओं की सांस्कृतिक पहचान और उनकी नई सामाजिक संरचनाओं में समायोजन की चुनौती प्रस्तुत की गई है। उनकी रचनाओं में नई भूमि पर आत्मसात करने की प्रक्रिया में उत्पन्न द्वंद्व और पुरानी जड़ों से जुड़े रहने की आकांक्षा का चित्रण मिलता है। इला प्रसाद की नायिकाएँ अपनी सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक जीवन मूल्यों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती हैं। उनकी कहानियाँ प्रवासी जीवन की कठिनाइयों और सांस्कृतिक संक्रमण के दर्द को सजीव बनाती हैं। साथ ही, उनकी रचनाओं में प्रवासी स्त्रियों के आत्मनिर्णय और सामाजिक पहचान के संघर्ष को भी उजागर किया गया है।

सुधा ओम ढींगरा के कथा-साहित्य में सांस्कृतिक जड़ों और प्रवासी समाज में बदलते मूल्यों के टकराव के कारण उत्पन्न मानसिक तनाव और सामाजिक अलगाव को अभिव्यक्ति दी गई है। उनकी रचनाओं में प्रवासी स्त्रियों का संघर्ष केवल सामाजिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और मानसिक स्तर पर भी होता है। सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में भारतीय पारिवारिक मूल्य, प्रवासी जीवन की व्यस्तता और सांस्कृतिक परिवर्तन के बीच जूझती स्त्रियों का चित्रण मिलता है। उनकी नायिकाएँ पारिवारिक विघटन, सांस्कृतिक अस्मिता और आत्मनिर्णय की खोज में नए समाज से टकराती हैं। उनकी कहानियों में सांस्कृतिक पहचान के संघर्ष के साथ-साथ स्त्री के भीतर उठते सवाल और उनकी आकांक्षाओं का जीवंत चित्र मिलता है।

इसके अतिरिक्त, प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक द्वंद्व केवल टकराव तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक सेतु की भूमिका भी निभाता है। यह प्रवासी स्त्रियों की पहचान के संघर्ष और आत्मस्वीकार की यात्रा को उजागर करता है। इस साहित्य के माध्यम से न केवल पूर्व और पश्चिम के बीच की भिन्नताओं को समझा जा सकता है, बल्कि दोनों संस्कृतियों के सामंजस्य और सह-अस्तित्व की संभावनाओं को भी महसूस किया जा सकता है। प्रवासी लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री की आंतरिक पीड़ा, मानसिक संघर्ष और सांस्कृतिक सामंजस्य की खोज जैसे महत्वपूर्ण विषय उभरते हैं। यह साहित्य प्रवासी स्त्रियों के अनुभवों को विस्तार और गहराई प्रदान करता है, जिससे पाठक उनके जीवन के बहुआयामी पहलुओं से परिचित होते हैं।

आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण:

प्रवासी महिला लेखन में आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण के स्वर न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि यह समाज के भीतर गहरे प्रभाव भी डालते हैं। यह लेखन प्रवासी महिलाओं की संघर्षों, सपनों, और आकांक्षाओं को एक नये दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है, जिससे समाज में उनके स्थान और भूमिका को फिर से परिभाषित किया जाता है। इस लेखन के माध्यम से प्रवासी महिलाएँ अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में बदलाव लाने की दिशा में साहसिक कदम उठाती हैं।

सुर्मि बेदी की कहानियाँ इन पहलुओं को स्पष्ट रूप से उजागर करती हैं। उनकी रचनाएँ स्त्री स्वायत्तता, आर्थिक स्वतंत्रता, और सामाजिक बदलाव की दिशा में किए गए प्रयासों को केंद्र में रखती हैं। सुर्मि बेदी का लेखन न केवल महिलाओं की व्यक्तिगत आज़ादी की बात करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि कैसे प्रवासी महिलाएँ पारंपरिक और सांस्कृतिक दबावों के बावजूद अपनी अस्मिता और स्वतंत्रता को पुनः स्थापित करने की कोशिश करती हैं। उनकी कहानियाँ यह बताती हैं कि कैसे ये महिलाएँ पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक दबावों का सामना करती हुई अपने जीवन के फैसले खुद लेती हैं। बेदी की कहानियाँ दर्शाती हैं कि प्रवासी महिलाओं को अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपने परंपरागत सोच और समाज की संकुचित सीमाओं से बाहर निकलना पड़ता है।

सुधा ओम ढींगरा का साहित्य भी प्रवासी महिलाओं के आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण के विषय पर गहरी छानबीन करता है। उनके लेखन में यह देखा जाता है कि कैसे प्रवासी महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं और एक सशक्त सामाजिक भूमिका निभाते हुए अपनी पहचान को नई दिशा दे रही हैं। ढींगरा के साहित्य में मुख्य रूप से प्रवासी महिलाओं की इस नई जागरूकता का चित्रण होता है, जो न केवल उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करता है, बल्कि उन्हें यह सिखाता है कि एक महिला केवल पारिवारिक भूमिका तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज में अपनी एक विशिष्ट और प्रभावशाली भूमिका निभाती है।

सुधा ओम ढींगरा के किरदार यह स्पष्ट करते हैं कि प्रवासी महिलाएँ अब अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, शैक्षिक विकास, और समाज में समानता के लिए भी संघर्ष कर रही हैं।

उनके लेखन में यह दिखता है कि कैसे महिलाएँ अपनी कड़ी मेहनत और संघर्ष से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं, जिससे न केवल उनका व्यक्तिगत जीवन बेहतर होता है, बल्कि समाज में उनके योगदान को भी मान्यता मिलती है। ढींगरा का लेखन यह संकेत करता है कि प्रवासी महिलाएँ न केवल पारिवारिक जीवन में संतुलन बनाए रखती हैं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन दोनों लेखिकाओं के साहित्य में प्रवासी महिलाओं के आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण के प्रति गहरी संवेदनशीलता देखने को मिलती है। उनके लेखन के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि प्रवासी महिलाएँ अपने संघर्षों के बावजूद अपने अधिकारों को समझने, स्वाधीनता प्राप्त करने और समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए लगातार संघर्ष कर रही हैं। उनके जीवन और लेखन के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि प्रवासी महिलाएँ न केवल अपने पारिवारिक दायित्वों को निभाती हैं, बल्कि एक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, और सशक्त पहचान को स्थापित करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहती हैं।

विश्लेषण

(क) सुधा ओम ढींगरा: प्रवासी महिलाओं के संघर्ष और सामाजिक अस्मिता का सजीव चित्रण:

सुधा ओम ढींगरा का साहित्य प्रवासी महिलाओं के संघर्ष, उनके सामाजिक अस्मिता, और मानसिक द्वंद्व का गहरी संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ चित्रण करता है। उनकी रचनाएँ न केवल प्रवासी समाज की महिलाएँ क्या महसूस करती हैं, बल्कि उनका समाज के प्रति दृष्टिकोण और उनके भीतर चल रहे आंतरिक संघर्ष को भी सामने लाती हैं। ढींगरा की कहानियाँ प्रवासी महिलाओं के जीवन की जटिलताओं और उन समस्याओं को उजागर करती हैं, जो आमतौर पर समाज की मुख्यधारा से बाहर होती हैं। उनकी रचनाएँ स्त्री-पुरुष असमानता, पारिवारिक विघटन, सांस्कृतिक टकराव और पहचान के संकट जैसे विषयों पर गहरी विचारशीलता के साथ केंद्रित हैं।

उनकी उपन्यासों में प्रवासी समाज की महिलाओं की सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिति को बहुत संवेदनशीलता से चित्रित किया गया है। यह साहित्य उन महिलाओं के भीतर के संघर्ष को सामने लाता है जो पारिवारिक संबंधों, पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक अपेक्षाओं के बीच जकड़ी हुई होती हैं। ढींगरा ने अपने लेखन में उन महिलाओं की दुविधाओं और द्वंद्वों को दिखाया है, जो एक ओर अपनी पारंपरिक पहचान को बरकरार रखना चाहती हैं, जबकि दूसरी ओर पश्चिमी समाज में आकर खुद को एक नई पहचान देने की कोशिश करती हैं।

उनकी रचनाओं में यह भी दिखाया गया है कि प्रवासी महिलाएँ किस प्रकार अपने पारिवारिक और सामाजिक दबावों का सामना करते हुए आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की ओर बढ़ने की कोशिश करती हैं। वे स्त्री-पुरुष असमानता के खिलाफ खड़ी होती हैं और समाज में समान अधिकारों की मांग करती हैं। ढींगरा के पात्र अक्सर पारिवारिक विघटन और टूटते रिश्तों से जूझते हुए अपने अस्तित्व की तलाश करते हैं। उनका लेखन यह बताता

है कि प्रवासी महिलाएँ अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में बदलाव की ओर अग्रसर होती हैं, हालांकि यह प्रक्रिया आसान नहीं होती और इसके लिए उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

सुधा ओम ढींगरा के उपन्यासों में एक और महत्वपूर्ण पहलू है — सांस्कृतिक टकराव। जब महिलाएँ अपने पारंपरिक भारतीय मूल्यों को छोड़कर पश्चिमी दुनिया में कदम रखती हैं, तो वे एक नई पहचान बनाने के प्रयास में होती हैं। यह संघर्ष उनके भीतर एक मानसिक द्वंद्व पैदा करता है, क्योंकि उन्हें दोनों संस्कृतियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करनी होती है। ढींगरा इस संघर्ष को इस तरह से प्रस्तुत करती हैं कि पाठक को उस मानसिक और भावनात्मक स्थिति का गहरा एहसास होता है, जिसमें प्रवासी महिलाएँ फंसी होती हैं। इस टकराव से उन्हें केवल बाहरी दुनिया से ही नहीं, बल्कि अपने परिवार और समाज से भी कई विरोधों का सामना करना पड़ता है।

(ख) सुर्मि बेदी: आत्मनिर्भरता और सामाजिक बदलाव की गाथाएँ:

सुर्मि बेदी की कहानियाँ प्रवासी महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया को बहुत ही सजीव रूप से प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाएँ स्त्री स्वायत्तता और आर्थिक स्वतंत्रता के महत्व को उजागर करती हैं, जहां महिला अपने अधिकारों को पहचानते हुए पारंपरिक और सांस्कृतिक बाधाओं को चुनौती देती है। बेदी के पात्र यह दिखाते हैं कि कैसे एक महिला, जो पारिवारिक और सामाजिक दबावों से घिरी होती है, अपनी पहचान को फिर से स्थापित करती है और अपने जीवन के फैसले खुद लेने की शक्ति प्राप्त करती है। उनकी कहानियों में महिलाएँ न केवल घरेलू दायित्वों से बाहर निकलने की कोशिश करती हैं, बल्कि वे समाज में अपनी एक मजबूत और स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए संघर्ष करती हैं।

बेदी की रचनाएँ प्रवासी महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती हैं, क्योंकि वे दिखाती हैं कि कैसे महिलाएँ अपने भीतर की ताकत को पहचानते हुए सामाजिक और पारिवारिक परिवर्तनों को जन्म देती हैं। उनके लेखन में यह साफ नजर आता है कि प्रवासी महिलाएँ अपने परिवार और समाज में अपनी अस्मिता और स्थान को कायम रखने के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए भी कदम उठाती हैं। बेदी का साहित्य यह संदेश देता है कि महिलाएँ केवल अपने पारंपरिक दायित्वों से बंधी नहीं रहतीं, बल्कि वे अपनी आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के लिए साहसिक कदम उठाती हैं, जो समाज में बदलाव का एक महत्वपूर्ण कारक बनता है।

(ग) उषा प्रियंवदा: प्रवासी स्त्री की मानसिक पीड़ा और सांस्कृतिक असमंजस:

उषा प्रियंवदा के साहित्य में प्रवासी महिलाओं की मानसिक पीड़ा और सांस्कृतिक असमंजस का बहुत गहराई से चित्रण किया गया है। उनकी रचनाएँ उन आंतरिक द्वंद्वों को उजागर करती हैं जो प्रवासी महिलाएँ अपनी पहचान, मूल्यों और संस्कृति के बीच अनुभव करती हैं। प्रियंवदा ने दिखाया है कि प्रवासी महिलाएँ अपने पारंपरिक भारतीय मूल्यों से जुड़ी रहती हैं, लेकिन पश्चिमी समाज में रहते हुए उन्हें एक नई पहचान की आवश्यकता महसूस होती है। यह मानसिक संघर्ष उन्हें अक्सर अकेलापन और निराशा का एहसास कराता है,

क्योंकि वे दोनों संस्कृतियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करती हैं, लेकिन कई बार यह संतुलन उनके लिए असंभव सा महसूस होता है।

प्रियंवदा की कहानियाँ प्रवासी जीवन के मानसिक तनावों और सांस्कृतिक बिखराव को उजागर करती हैं, जिसमें महिलाएँ अपनी जड़ों और नए समाज के बीच उलझती हैं। उनके पात्र अक्सर आत्मसंदेह और सांस्कृतिक संकट से जूझते हैं, जो उनकी पहचान को कमजोर करता है। वे न केवल अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश करती हैं, बल्कि एक नयी दुनिया में खुद को स्वीकार करने की जद्दोजहद भी करती हैं। प्रियंवदा का लेखन यह दिखाता है कि प्रवासी महिलाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक संकटों से गुजरते हुए अपनी पहचान की तलाश करती हैं, और यह प्रक्रिया उनके लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण होती है।

(घ) इला प्रसाद: सांस्कृतिक टकराव और सामाजिक पहचान की खोज:

इला प्रसाद के साहित्य में सांस्कृतिक टकराव और प्रवासी महिलाओं की सामाजिक पहचान की खोज को बारीकी से उकेरा गया है। उनकी रचनाएँ यह दिखाती हैं कि कैसे भारतीय महिलाएँ पश्चिमी समाज में आकर अपने पारंपरिक मूल्यों और विचारधाराओं के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश करती हैं। वे दोनों संस्कृतियों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती हैं, जिससे उनके जीवन में मानसिक और भावनात्मक संघर्ष उत्पन्न होता है। इला प्रसाद के पात्र अपनी पहचान को लेकर निरंतर संघर्षरत रहते हैं, क्योंकि उन्हें अपने भारतीय मूल्यों को नकारते हुए पश्चिमी समाज में अपनी जगह बनाने की आवश्यकता महसूस होती है। यह संघर्ष उनकी व्यक्तिगत यात्रा का हिस्सा बन जाता है, जो पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करता है कि प्रवासी महिलाएँ किस तरह अपनी संस्कृति और समाज से जुड़ी रहते हुए एक नई पहचान स्थापित करती हैं।

इला प्रसाद का लेखन प्रवासी जीवन की जटिलताओं और पाश्चात्य समाज में भारतीय मूल की महिलाओं के संघर्ष को गहराई से परिभाषित करता है। उनके उपन्यासों में, प्रवासी महिलाएँ अपने परिवार, समाज और बाहरी दुनिया के बीच उलझी हुई होती हैं। वे दोनों संस्कृतियों की अपेक्षाओं और दबावों के बीच खुद को खोजना चाहती हैं, लेकिन यह यात्रा बहुत कठिन और तनावपूर्ण होती है। प्रसाद के पात्रों की यह मानसिक स्थिति और संघर्ष यह दर्शाता है कि प्रवासी महिलाएँ केवल भौतिक बदलावों से नहीं गुजरतीं, बल्कि उनकी मानसिक और सांस्कृतिक पहचान भी एक नई दिशा में विकसित होती है, जो उनके जीवन को पुनः परिभाषित करती है।

निष्कर्ष:

प्रवासी हिंदी साहित्य में नारीवादी स्वर और स्त्री अस्मिता समकालीन साहित्यिक विमर्श का अभिन्न अंग है। प्रवासी महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रवासी जीवन के संघर्षों, सांस्कृतिक द्वंद्वों और स्त्री अस्मिता को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। उनका लेखन प्रवासी महिलाओं की आंतरिक पीड़ा और सामाजिक परिवर्तन की चेतना को समाज के सामने लाता है।

संदर्भ-

प्रवासी हिंदी साहित्य के विविध आयाम, संपादक प्रो. प्रदीप श्रीधर, विद्या प्रकाषन, कानपुर, संस्करण 2018, पृ0 सं0 467

प्रवासी महिला कथाकार, डॉ0 एम0 फीरोज खान, सारंग प्रकाषन, प्रथम संस्करण 2018

सुधा ओम ढ़ींगरा, कौन सी जमीन अपनी, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2010 54 सुधा ओम ढ़ींगरा, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, शिवना प्रकाशन, सीहोर, प्रथम संस्करण-2015 55 सुधा ओम ढ़ींगरा, नक्काशीदार केबिनेट, शिवना प्रकाशन, सीहोर, संस्करण-2016

सुषम बेदी, इतर, नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली, संस्करण-1998

तीसरी आँख, सुषम बेदी, पराग प्रकाषन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृ. 17-18

तीसरी आँख, सुषम बेदी, पराग प्रकाषन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ0 सं0 159

जन्म, पुष्पिता अवस्थी, मेघा बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृ0 सं0 131

अमृत लाल नागर के उपन्यासों में समाज और संस्कृति, डॉ0 गुलाम फरीद साबरी, नेहा प्रकाषन दिल्ली, संस्करण 2014, पृ0 सं0 71

डॉ0 गुलाम फरीद साबरी, अमृत लाल नागर के उपन्यासों में समाज एवं संस्कृति, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2014

न भेज्यो विदेष, सुदर्षन प्रियदर्षिनी, नमन प्रकाषन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृ. सं0 23

वैष्विक रचनाकार: कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ भाग-1, सुधा ओम जी, षिवना प्रकाषन, सीहोर, प्रथम संस्करण 2013 पृ. 225